

सुरेन्द्र मोहन पाठक

Vol - 2

सम्पूर्ण कथा साहित्य

ट्रेन में लाश

उस रोज मैं और मेरा मित्र पुलिस इंस्पेक्टर एन एस अमीठिया कनाट प्लेस में मद्रास कैफे में बैठे थे कि पता नहीं कैसे वार्तालाप का रुख एक बड़े असाधारण विषय की ओर मुड़ गया । विषय था डिडक्टिव रीजनिंग (Deductive Reasoning) । वह एक पुलिस अधिकारी था इसलिए डिडक्टिव रीजनिंग को बड़ी अहमियत देता था । मेरी धारणा यह थी कि किसी बात से निकाला हुआ कोई नतीजा तर्कसंगत और युक्तियुक्त होते हुए भी गलत हो सकता था । अमीठिया यह बात मानने को तैयार नहीं था ।

मैंने कहा कि उसके पेशे में तो ऐसे गलत नतीजे निकाले जाने की सम्भावनाएं और भी ज्यादा होती थीं और सबसे अधिक गलत नतीजे निकाले जाते थे वकीलों के पेशे में क्योंकि वहां नीयत यह जानने की नहीं होती कि गवाह क्या कहना चाह रहा है बल्कि यह जानने की होती है कि वह क्या छुपाना चाह रहा है ।

“शायद तुम्हारा इशारा गवाह के वकील द्वारा क्रास एग्जामिनेशन की तरफ है” - अमीठिया बोला - “लेकिन तुम यह भूल रहे हो कि अदालत में दोनों पक्षों का वकील होता है । अगर कोई तर्कहीन नतीजा निकाला जाएगा तो दूसरा वकील उस पर एतराज नहीं जाहिर करेगा ?”

“भई, मैं तो यह कह रहा हूं कि नतीजा तर्कसंगत हो सकता है युक्तियुक्त हो सकता है लेकिन फिर भी गलत हो सकता है ।”

"कोई मिसाल दो ।" - वह चैलेंजभरे स्वर में बोला ।

"सुनो, मैं कहता हूं छज्जूराम ने कल लंच में दस रोटियां खाई । यह एक तथ्य है । या मिसाल के तौर पर समझ लो कि एक तथ्य है । इससे तुम क्या नतीजा निकालते हो ?"

"इस मामूली सी प्रसंगहीन बात से क्या नतीजा निकाला जा सकता है ? इससे यही नतीजा निकाला जा सकता है कि छज्जूराम नाम का आदमी लंच में दस रोटियां खाता है ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि उसने दस रोटियां खाई हैं ।"

"क्यों दस रोटियां खाई हैं ?"

"क्योंकि उसे दस रोटियों की ही भूख थी ।"

"यह तुम्हारा इस फिकरे से निकाला हुआ नतीजा है ?"

"हां !"

"यह गलत नहीं हो सकता ?"

"कैसे हो सकता है !"

"जैसे भूख तो उसे पन्द्रह रोटियों की थी लेकिन दस उसने इसलिए खाई थी क्योंकि कल लंच के समय उसके लिए केवल दस ही रोटियां उपलब्ध थीं ! जैसे इत्तफाक से कल लंच के समय उसके पास दस ही रोटियां खरीदने के काबिल पैसे उपलब्ध हों, जबकि खाना वह और चाहता हो !

जैसे असल में वह लंच में चार ही रोटियां खाने वाला आदमी हो लेकिन कल लंच में उसने किसी से शर्त लगाकर जबरदस्ती दस रोटियां खाई हों । ये तमाम नतीजे युक्तिसंगत हैं लेकिन फिर भी ये सारे के सारे ही गलत हो सकते हैं ।"

अमीठिया सोच में पड़ गया ।

"तुम मुझे दस पन्द्रह शब्दों का कोई एक फिकरा बताओ" - मैं बोला - "और मैं तुम्हें उसमें से ऐसे करामाती नतीजे निकल कर दिखा दूंगा जिनकी वह फिकरा कहते हुए तुमने कल्पना भी नहीं की होगी ।"

"यहां से उठो ।" - एकाएक अमीठिया उठ खड़ा हुआ - "बहुत शोर मच रहा है ।"

"वेटर को तो आने दो । बिल तो दे दें ।"

"काउन्टर पर दे देंगे ।"

मैं भी उठा । मैं काउन्टर की तरफ बढ़ गया । अमीठिया सीढ़ियों के पास जाकर खड़ा हो गया और मेरी प्रतीक्षा करने लगा ।

सीढ़ियों पर बहुत लोग आ जा रहे थे इसलिए अमीठिया को हर बार किसी न किसी को रास्ता देने के लिए एक ओर हटना पड़ता था । उसने एक बार बेसब्रेपन से मेरी ओर देखा और फिर संकेत में मुझे कहा कि वह मेरा नीचे इन्तजार कर रहा है । मैंने सहमति में सिर हिलाया । वह सीढ़ियां उतर गया । थोड़ी देर बाद मैं भी सीढ़ियां उतरकर नीचे पहुंचा । वह बरामदे में खड़ा था ।

"पौने नौ मील का पैदल सफर कोई मजाक नहीं ।" - मुझे देखते ही वह बोला - "खास तौर पर बारिश..."

"हां-हां !" - मैं तनिक सकपकाकर बोला - "जरूर मजाक नहीं होगा । पौने नौ मील पैदल काफी फासला होता है । मुझे क्यों बता रहे हो ?"

"यह एक पूरे चौदह शब्दों का फिकरा है ।"

"फिर क्या हुआ ?"

"तुमने अभी तो कहा था कि अगर मैं तुम्हें दस-पन्द्रह शब्दों का कोई फिकरा बताऊं तो..."

"ओह ! वह बात ! लेकिन यह फिकरा कैसे आया तुम्हारे जेहन में ?"

"बस आ गया । अब तुम दिखाओ इसमें से क्या नतीजे निकालकर दिखाते हो ?"

"गम्भीर हो ? मैं सचमुच कोशिश करूं ?"

"अजीब आदमी हो !" - अमीठिया तनिक भड़ककर बोला, - "अभी तुमने खुद ही तो कहा था कि..."

"ओके ! ओके ! मैं कोशिश करता हूं । क्या फिकरा था ?"

"पौने नौ मील का पैदल सफर कोई मजाक नहीं, खास तौर पर बारिश में ।"

"पौने नौ मील का पैदल सफर कोई मजाक नहीं ।" -

मैंने दोहराया - "खास तौर पर बारिश में ।"

अमीठिया चुप रहा ।

हम पैदल ही आगे बढ़ने लगे ।

"ओके !" - मैं बोला - "मेरा पहला नतीजा तो यह है कि यह फिकरा एक निहायत परेशानहाल आदमी के मुंह से निकला है ।"

"यह कोई खास नतीजा नहीं । यह तो गधा भी समझ सकता है । जो आदमी बारिश में पौने नौ मील पैदल चलेगा वह परेशानहाल तो होगा ही ।"

"आगे सुनो । बारिश अनपेक्षित थी । एकाएक बारिश होने लगेगी, इसकी उसे उम्मीद नहीं थी ।"

"यह कैसे ?"

मैंने बताया ।

"मान लिया, वैसे यह भी कोई खास नतीजा नहीं । आगे बढ़ो ।"

मैं कुछ क्षण सोचता रहा और फिर बोला - "वह आदमी जिसने यह फिकरा कहा था कोई एथलीट या ऐसा शख्स नहीं था कि चलना-फिरना जिसकी रोजमर्रा की जिन्दगी का हिस्सा हो, जैसे पोस्टमैन या फेरी वाला ।"

"यह कैसे ?"

"भई, फिकरे की टोन ही बता रही है कि चलने वाले पर

पौने नौ मील का सफर बड़ा भारी गुजरा है वरना वह यह क्यों कहता कि पौने नौ मील का सफर कोई मजाक नहीं । इतना फासला पोस्टमैन या फेरी वाला आम चल लेता है । इतना फासला तो गोल्फ का खिलाड़ी गोल्फ के गेम में चल लेता है जबकि गोल्फ तो बूढ़ों का खेल माना जाता है ।"

"क्या पता यह फासला किसी फौजी ने, जो कि पैदल चलने का आदी होता है, किसी जंगली ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर तय किया हो ! तब तो, बारिश हो या न हो, पौने नौ मील का पैदल सफर एक कठिन, दुखदाई और शिकायत के काबिल फासला ही माना जाएगा ।"

"ऐसे तो तुम यह भी कह सकते हो कि शायद चलने वाला लंगड़ा हो ।" - मैं व्यंगपूर्ण स्वर में बोला - "या उसके पैरों में चोट लगी हो । या वह कोई रिसर्च स्कालर हो जो खुद चलकर यह फैसला करना चाहता हो कि पौने नौ मील पैदल सफर कोई मजाक है या नहीं । देखो अमीठिया, इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूं एक-दो छूट तो तुम्हें मुझको देनी होंगी ।"

"क्या मतलब ?"

"मेरे लिए तो तुम्हारा यह फिकरा आसमान से टपका है । तुमने फिकरा सुनाया और मैंने उसे ज्यों का त्यों कबूल कर लिया, मुझे यह नहीं मालूम कि यह फिकरा किसने कहा और किस सन्दर्भ में कहा । साधारणतया हर फिकरा किसी विशेष स्थिति का किसी विशिष्ट सन्दर्भ का अंग होता है ।"

"तुम क्या छूट चाहते हो ?"

"पहले तो यह मानो कि यह फिकरा खामखाह, मजाक में नहीं कहा गया था यानी कि कहने वाला किसी ऐसे पैदल

सफर का जिक्र कर रहा था जो उसने वाकई किया था और वह सफर करना हर हाल में जरूरी था यानी कि वह कोई शर्त जीतने के लिए या ऐसे ही किसी जरूरत के लिहाज से गैरजरूरी काम के तौर पर नहीं किया गया था । अर्थात यह फासला तय किया गया था और इसे तय करना निहायत जरूरी था ।"

"चलो मान ली तुम्हारी बात । और ?"

"एक बात यह भी मानो कि यह फासला यहीं तय किया गया था ।"

"यहीं कहां ? दिल्ली में ?"

"नहीं ! आसपास कहीं भी । दिल्ली में किसी को पौने नौ मील बारिश में पैदल चलना पड़ा हो, यह सम्भव नहीं लगता । दिल्ली में कितने ही आलनाइट टैक्सी स्टैण्ड हैं । सवारी हर वक्त मिल जाती है । कहने का मतलब यह है कि यह फासला ऐसे स्थान पर तय किया गया था जहां रात को सवारी उपलब्ध नहीं, किसी भी कीमत पर उपलब्ध नहीं ।"

"कोई छोटा-सा कस्बा या गांव ?"

"हां ।"

"ओके ।"

"फिर इसी बात से आगे यह भी नतीजा निकाला जा सकता है की वह पैदल सफर रात में हुआ था न कि दिन में क्योंकि दिन में तो शहर हो या कस्बा, किसी न किसी तरह की सवारी का इन्तजाम किया जा ही सकता है ।"

"ठीक ।"

"बसें तकरीबन सब जगह ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे तक चलती हैं और सुबह पांच साढ़े पांच फिर चलनी शुरू हो जाती हैं । यह बात मानते हो ?"

"मान लेते हैं ।"

"यह तुम पहले ही मान चुके हो कि सफर दिन में नहीं रात में हुआ ?"

"हां ।"

"इसका मतलब यह हुआ कि सफर बहुत रात गए शुरू हुआ था यानी कि आधी रात और सुबह पांच छ: के बीच ।"

"यह जरूरी नहीं । शायद उसे बस उपलब्ध हो लेकिन बस पर इसलिए सवार न हुआ हो क्योंकि वह किसी के द्वारा देखा न जाना चाहता हो !"

"तुम समझते हो कि सड़क पर अकेले चलते आदमी की ओर किसी का ध्यान आकर्षित नहीं होगा ? भाई साहब, बस में तो लोग अपने आप में मग्न होते हैं । वे तो अक्सर किसी की ओर ध्यान देते ही नहीं । असाधारण समय में असाधारण स्थिति में अकेले चलते आदमी की और तो हर किसी का ध्यान जाता है ।"

"ओके, ओके मैं अपना एतराज वापिस ले लेता हूं ।"

"अब मैं यह कहना चाहता हूं कि वह पैदल चलकर किसी शहर की तरफ जा रहा था न कि किसी शहर से बाहर

।"

"यह तुम इसलिए कह रहे हो क्योंकि शहर से बाहर कही जाने के लिए तो किसी न किसी प्रकार की सवारी का इन्तजाम किया जा ही सकता है ।"

"यह भी और एक पहलू और भी है । जरा फासले पर गौर करो । पौने नौ मील । यह एक निश्चित नपा तुला पक्का फासला है । अगर मैं यह कहूं कि आज मैं दस मील की सैर करके आया या आज मैंने सौ मील मोटर साइकल चलाई तो ये फासले कोई नपे तुले नहीं होते । शायद मैं आठ मील चला होऊं । शायद मैं नब्बे और एक सौ दस मील के बीच कहीं मोटर साइकिल चलाई हो । यानि कि दस और सौ गोल मोल, अन्दाजन कही गई, संख्यायें हैं लेकिन पौने नौ मील नपी तुली, निश्चित संख्या है । यह कहने से कि आप दस मील चले, लगता है कि आप लगभग दस मील चले । फासला थोड़ा बहुत इधर-उधर भी हो सकता है लेकिन जब आप कहते हैं कि आप पौने नौ मील चले तो इसका निर्विवाद रूप से यह मतलब होगा कि उसको पक्का पता है कि वह फासला पौने नौ मील ही था । आपसे पूछा जाए मेरठ कितनी दूर है - आप तपाक से कह देंगे चालीस मील दूर । क्यों ? क्योंकि आपको मील के पत्थर या रेलवे टाइम टेबल में वह फासला देखने का इत्तफाक हुआ है लेकिन मेरठ का अपना घेरा भी तो कोई पांच-छ: मील होगा । जिसको दिल्ली रहने वाला गिनती में नहीं लाता क्योंकि मेरठ दिल्ली से चालीस मील है इसलिए आपकी निगाह में मेरठ का हर कोना दिल्ली से चालीस मील है लेकिन जो आदमी मेरठ से दिल्ली आता है अगर आप उससे पूछें तो वह आपको एकदम निश्चित फासला बताएगा और उस इलाके से बताएगा कि जहां कि वह रहता है । वह कह सकता है कि मेरे घर से दिल्ली साढ़े

अड़तीस मील दूर है या सवा इकतालीस मील दूर है ।"

"इस दलील में कोई खास दम नहीं, पाठक साहब । अकेले दम नहीं लेकिन तुम्हारी इस बात के साथ मिलाकर, कि अगर वह शहर में होता तो किसी सवारी का इन्तजाम कर लेता, इसमें दम आ जाता है ।"

"मेरा अगला नतीजा यह है कि वह किसी पूर्वनिर्धारित गन्तव्य स्थान पर जा रहा था और उसका किसी निश्चित समय पर वहां पहुंचना जरूरी था ।"

"क्यों ? क्या पता उसका कार बिगड़ गई हो इसलिए उसे चलना पड़ा हो या उसकी बीवी के बच्चा होने वाला हो और उसको किसी को बुलाने जाना पड़ा हो ।"

"तुम्हारी बच्चे वाली बात में कोई दम नहीं । बच्चा होने का भी कोई निर्धारित प्रोग्राम होता है । जच्चा को खूब अन्दाजा होता है कि बच्चा लगभग कब होगा और फिर लोग ऐसे मामलों का पहले से इन्तजाम करके रखते हैं । ऐसी नाजुक स्थिति में किसी दाई या डाक्टर को बुलाने के लिए पौने नौ मील चलकर नहीं जाना पड़ता ।"

"छोड़ो, कार बिगड़ने वाली बात पर आओ । जिस आदमी की कार बिगड़ी हो, वह मील के पत्थर से जान सकता है कि उसकी कार नगर से ठीक पौने नौ मील दूर बिगड़ी थी ।"

"ठीक है लेकिन वह रात के समय बारिश में पौने नौ मील चलेगा क्यों ? इतनी मुसीबतों से घर पहुंचने से अच्छा यह नहीं कि वह कार में ही सो रहे और सवेरा होने का इन्तजार करे ?"

"शायद किसी वजह से उसका घर पहुंचना जरूरी हो ।"

"तो वह कार के पास ही खड़ा होकर किसी और आती जाती कार से लिफ्ट मांगने की कोशिश करता ।"

"शायद सड़क पर कोई और कार दिखाई ही न दे रही हो ।"

"भाई साहब, फासले पर भी तो गौर करो । अगर वह घर जा रहा था और तुम्हारे कथनानुसार उसका घर पहुंचना जरूरी था इसलिए वह पैदल चला तो जरा यह तो सोचो कि बारिश में पैदल चलकर पौने नौ मील का फासला वह कितनी देर में तय करेगा ?"

"कम से कम चार घण्टे में ।"

"एग्जैक्टली । यानी कि अगर रात को एक बजे कार बिगड़ी तो वह पांच बजे शहर में पहुंचा । सुबह पांच बजे तो बसें चलनी शुरू हो जाती हैं । बस पौने नौ मील का फासला आधे घण्टे से कम समय में तय कर सकती है । अब सोचो बारिश में चार घंटे टांगे तोड़ते रहने से उसे क्या हासिल हुआ !"

"शायद कार एक बजे न बिगड़ी हो ! शायद वह ग्यारह बजे बजे बिगड़ी हो !"

"फिर तो उसका पैदल चलकर घर पहुंचना और भी गैरजरूरी हो जाता है क्योंकि उस समय तक तो उसे आखिरी बस भी मिल सकती थी ।"

"ओके । ओके मैंने मान लिया कि वह किसी पूर्वनिर्धारित गन्तव्य स्थान पर जा रहा था और उसका किसी निश्चित समय वहां पहुंचना जरूरी था ।"

"किसी निश्चित समय पर चलकर ।"

"वह तो प्रत्यक्ष है । अगर निश्चित समय पर चलेगा तभी तो निश्चित समय पर पहुंचेगा । जैसे अगर उसने कहीं पांच बजे पहुंचना था । चार घण्टे पैदल चलते जितना फासला है पौने नौ मील । जाहिर है कि वह एक बजे चलेगा तभी तो पांच बजे पहुंचेगा ।"

"एक बजे क्यों चलेगा ? वह ग्यारह बजे चलने वाली आखिरी बस पर बैठ जाए, आधे घण्टे में वह गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाए और फिर वहीं इन्तजार करे । इस प्रकार वह पौने नौ मील चलने की जहमत से बच सकता है लेकिन वह पौने नौ मील चला है इसलिए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उसका किसी निश्चित समय से पहले चलना भी सम्भव नहीं था । मानते हो ?"

"मानता हूं ।"

"फिर यह भी मानो कि उसको पांच बजे के आसपास ही कहीं पहुंचना था ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि अगर उसने पांच के बाद पहुंचना होता तो वह सुबह पहली बस पर सवार हो जाता और लगभग साढ़े पांच बजे गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाता लेकिन उसने ऐसा नहीं किया ।"

"मान लिया ।"

"अब चलने में क्योंकि चार घण्टे लगते हैं इसलिए पांच बजे गन्तव्य स्थान पर पहुंचने के लिए वह एक बजे चला होगा । वह आखिरी बस पकड़कर गन्तव्य स्थान पर पहले नहीं पहुंचा बल्कि एक बजे पैदल चला, इससे जाहिर होता है कि जहां से वह चला था एक बजे तक उसका मौजूद रहना जरूरी था । क्यों जरूरी था ?"

"तुम बताओ ।"

"जरूर वह वहां किसी प्रकार के सिग्नल या सन्देशे या टेलीकाल का इन्तजार कर रहा था । जब तक वह काल न आ जाती, वह अपने स्थान से हिल नहीं सकता था । जब तक काल आई तब तक आखिरी बस जा चुकी थी और वह किसी ऐसी छोटी जगह पर मौजूद रहा होगा जहां आधी रात को नौ मील जितना फासला तय करने लायक कोई सवारी उपलब्ध नहीं थी इसलिए उसे रोते धोते पौने नौ मील बारिश में चलकर गन्तव्य स्थान पर पहुंचना पड़ा ।"

"तुम यह कैसे कह सकते हो कि जहां उसने पहुंचना था पांच बजे ही पहुंचना था ?"

"बताया तो । अगर उसने पांच से पहले पहुंचना होता तो वह रात की आखिरी बस पर आता और अगर उसने पांच के बाद में पहुंचना होता तो वह सुबह की पहली बस से जाता । यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है कि उसने पांच बजे कहीं पहुंचना था और जिस काल के आने के बाद वह चला था वह साढ़े बारह और एक के बीच में आई थी ।"

"कैसे ?"

मैंने बताया ।

अमीठिया ने हामी भरी ।

तब तक हम पुलिस हैडक्वाटर की इमारत के सामने पहुंच चुके थे । बातों में हमे पता ही नहीं लगा था कि वह डेढ़ मील का फासला कब तय हो गया ।

अमीठिया के आमन्त्रण पर मैं उसके साथ हैडक्वाटर में उसके कमरे में पहुंचा ।

वहां एक पूरी दीवार पर उत्तर भारत का एक बहुत बड़ा नक्शा लगा हुआ था । मैं नक्शे के समीप पहुंचा और बड़े गौर से उसे देखने लगा । कितनी ही देर नक्शे का मुआयना करते रहने पर एकाएक मेरी निगाह एक स्थान पर पड़ी ।

"अमीठिया" - मैं बोला - "इधर आओ ।"

अमीठिया मेरी बगल में आ खड़ा हुआ ।

"यह देखो" - मैंने एक स्थान पर उंगली रखी - "यह काली पुर है । यह राजनगर और दिल्ली के बीच में एक स्थान है । और मुझे मालूम है, देवगाम नाम की एक जगह कालीपुर से ठीक पौने नौ मील दूर है ।"

"लेकिन भला कोई आदमी आधी रात को बारिश के मौसम में देवगाम से पैदल चलकर कालीपुर क्यों पहुंचना चाहेगा ।"

"तुम्हें मालूम है राजनगर और दिल्ली के बीच राजनगर एक्सप्रेस नामक एक नई सुपर फास्ट ट्रेन चली है ।"

"मालूम है ।"

"वह इस रूट की सबसे फास्ट ट्रेन है । राजनगर और दिल्ली के बीच वह केवल कालीपुर ही रूकती है वहां भी वह इसलिए रूकती है क्योंकि वहां उसमे पानी लेना होता है । और अमीठिया" - मैं अर्थपूर्ण स्वर में बोला - "वह गाड़ी ठीक पांच बजे कालीपुर पहुंचती है ।"

अमीठिया गहरी सोच में पड़ गया ।

"राजनगर एक्सप्रेस राजनगर से रात के पौने एक बजे चलती है और सुबह आठ बजे दिल्ली पहुंचती है ।"

"यानी कि कोई आदमी उस गाड़ी की खातिर देवागाम से पैदल चलकर कालीपुर आया ?"

"हां ।"

"वह कालीपुर ही क्यों न ठहर गया ?"

"शायद कालीपुर में उसे आदमी को फोन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी । शायद उसे सन्देश नहीं दिया जा सकता था । वह आदमी शायद रहने वाला देवगाम का था और उसके पास अपना फोन था । राजनगर से गाड़ी चल सकने के बाद किसी ने उसे फोन पर राजनगर एक्सप्रेस में सफर करते किसी आदमी की सूचना दी होगी । जैसे कि वह आदमी कौनसे डिब्बे में था और उसकी बर्थ का क्या नम्बर था, गाड़ी कालीपुर दो-तीन मिनट ही रूकती है । डिब्बा और बर्थ के नम्बर की खबर न होने पर उतने कम समय में ट्रेन पर सफर करते किसी आदमी को तलाश नहीं किया जा सकता ।"

"यार, आज तुम्हारी बातें को मुझे परीकथाओं जैसी अद्भुत लग रही है" - एकाएक अमीठिया सशंक स्वर में बोला - "मेरे तो दिल में खुर-खुर होने लगी है । मैं अभी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर फोन करता हूं । हालांकि मुझे उम्मीद नहीं कुछ हासिल हो लेकिन फिर भी मैं फोन करता हूं ।"

"जरूर करो ।" - मैं उसे प्रोत्साहन देता हुआ बोला ।

अमीठिया ने जब रिसीवर क्रेडिल पर रखा तो उसके चेहरे पर सख्त हैरानी के भाव थे । उसने यूं मेरी तरफ देखा जैसे मैं कोई अजूबा होऊं ।

"पाठक साहब" - वह नेत्र फैलाकर बोला - "पुलिस के इतिहास में आज तक ऐसा इत्तफाक नहीं हुआ होगा ।"

"क्या हुआ ?" - मैंने पूछा ।

"पिछली राजनगर एक्सप्रेस में एक कत्ल हो गया था । एक मुसाफिर अपनी बर्थ पर मरा पाया गया था । गाड़ी के दिल्ली पहुंचने पर तफ्तीश से पता लगा था कि उसे मरे तीन घंटे हो चुके थे । यानी कि उसका कत्ल पांच बजे हुआ था । यानि कि तब जब गाड़ी कालीपुर के स्टेशन पर पानी लेने के लिए खड़ी थी ।"

"मुझे ऐसी ही कोई उम्मीद थी । लेकिन यह इत्तफाक नहीं हो सकता । यह फिकरा तुम्हें कैसे सूझा ?"

"बस सूझ गया । इत्तफाक से मेरे दिमाग में आ गया ।"

"ऐसा नहीं हो सकता, यह कोई ऐसा फिकरा नहीं जो इत्तफाक से किसी के दिमाग में आ सकता हो । यह एक

खास ही फिकरा है आमतौर पर दिमाग में ऐसे फिकरे नहीं आते । मैंने तुम्हें दस-पन्द्रह शब्दों का एक फिकरा बताने के लिए कहा था । तुमसे कोई ऐसा सीधा-साधा निर्दोष फिकरा अपेक्षित था जैसे, मैं दूध पीता हूं क्योंकि यह मेरे स्वास्थ्य के लिए हितकर है न कि पौने नौ मील का पैदल सफर कोई मजाक नहीं खासतौर से बारिश में । यह किसी विशेष स्थिति, किसी विशेष प्रसंग का प्रतिपादन करने वाला फिकरा है । ऐसा फिकरा खामखाह दिमाग में भला कैसे आ सकता है !"

"लेकिन मैंने तो आज किसी से बात तक नहीं की और मद्रास कैफे में भी मैं सिर्फ तुम्हारे साथ था ।"

"हर वक्त तुम मेरे साथ नहीं थे । आज मैं काउन्टर पर बिल अदा कर रहा था । उस वक्त तुम पहले सीढ़ियों के पास अकेले खड़े थे और फिर सीढ़ियां उतरकर नीचे गए थे और मेरी दृष्टि से ओझल हो गए थे ।"

"सीढ़ियां उतरकर बाहर बरामदे में मैं मुश्किल से आधा मिनट खड़ा हुआ था कि तुम आ गए थे । लेकिन उस वक्त..." - अमीठिया सोचता हुआ बोला - "दो आदमी बातें करते हुए मेरी बगल से गुजरे थे और उनमें से एक मेरे साथ टकरा भी गया था ।"

"तुम उन्हें जानते थे ?"

"न । सवाल ही नहीं पैदा होता ।"

"बातें क्या कर रहे थे वे ?"

"पता नहीं लेकिन वे बातों में बहुत ज्यादा मशगूल उनमें से एक मुझसे टकराता नहीं ।"

"हम मद्रास कैफे में अक्सर जाते हैं और वहां अक्सर ग्राहक ही आते हैं । अगर वे दोनों वहां के पक्के ग्राहक तुम्हें उनकी सूरत जानी-पहचानी जरूर लगती ।"

"तुम्हारा मतलब है कि वे दोनों आदमी अपराधी हो सकते हैं ?"

"शायद ! मुझे शक है यह उन्हीं में से किसी की जुबान से निकला फिकरा था, जो तुम्हारे जेहन में बैठ गया था । क्योंकि तुरंत बाद मैं नीचे आया था और तुमने गोली की तरह वह फिकरा मुझ पर दाग दिया था ।"

अमीठिया सोच में पड़ गया ।

"बात मुझे जंच रही है ।" - मैं बोला - "यह कत्ल कम से कम दो आदमियों की योजना से हुआ था । एक वह जिसने राजनगर में शिकार का पीछा किया और ट्रेन में शिकार के डिब्बे और बर्थ का नम्बर जाना और दूसरा वह जिसको दिल्ली में फोन करके उसने यह जानकारी दी । बाद में अपने निजी वाहन से या प्लेन से पहला आदमी भी वहां पहुंच गया होगा, ताकि अगर अपने शिकार से उन्हें कोई माल-पानी हाथ लगा हो तो वे उसे बांट लें ।"

"नहीं ! चोरी कुछ नहीं गया ।"

"तो फिर देवगाम वाला आदमी किराए का हत्यारा होगा । पहले आदमी ने उससे कत्ल करवाया होगा और फिर कत्ल की उजरत देने के लिए वह यहां आया होगा ।"

"मैंने उन दोनों की सूरतें खूब अच्छी तरह देखी थीं । अभी हमें वहां से आए केवल आधा ही घण्टा हुआ है । क्या

पता वे दोनों अभी भी वहीं हों । चलो ।"

हम दोनों बाहर की तरफ झपटे ।

वे दोनों आदमी तब भी वहीं थे । पुलिस की सूरत देखते ही एक ने किचन की खिड़की के रास्ते भागने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका ।

दोनों गिरफ्तार हो गए ।

"पाठक !" - एकाएक अमीठिया ने पूछा - "यह बहस कैसे शुरू हुई थी ? तुम क्या सिद्ध करना चाहते थे ?"

"यही" - मैं बोला - "कि किसी बात से निकाला गया कोई नतीजा तर्कसंगत हो सकता है, युक्तियुक्त हो सकता है लेकिन फिर भी गलत हो सकता है ।"

अमीठिया ठठा कर हंसा ।

"हंस क्यों रहे हो ?" - मैं रुष्ट स्वर में बोला ।

लेकिन उसके कुछ कह पाने से पहले उसकी बात का मर्म मेरी समझ में आ गया और फिर मैं भी उसके साथ हंसने लगा ।

समाप्त